



हर कदम, हर उमर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

AgriSearch with a human touch

संपादक मण्डल

संरक्षक

डॉ. एस.के. पाटिल

कुलपति,
इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक

डॉ. जे. एस. उरकुरकर

निदेशक विस्तार सेवाएं,
रायपुर (छ.ग.)

उत्प्रेरक

डॉ. अनुपम मिश्रा

आंचलिक परियोजना निदेशक
जोन-7, भा.कृ.अनु.प.,
जबलपुर (म.प्र.)

सह उत्प्रेरक

डॉ. सी. आर. गुप्ता

अधिष्ठाता
कृ. महा., बिलासपुर (छ.ग.)

प्रकाशक

डॉ. राम निवास शर्मा

कार्यक्रम समन्वयक,
कृ. वि. केन्द्र, बिलासपुर

संपादक

डॉ. दिनेश कुमार शर्मा

प्रमुख वैज्ञानिक
कृषि प्रसार शिक्षा, कृ. वि. केन्द्र

सह-संपादक

श्री विनोद निर्मलकर

श्रीमती निवेदिता पाठक

तकनीकी सहायक, कृ. वि. केन्द्र

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें 2013



गेहूँ में जल प्रबन्धन

जिन किसान भाइयों के पास भरपूर सिंचाई सुविधा उपलब्ध है वे रबी के मौसम में सिंचित गेहूँ की खेती से जो शुद्ध मुनाफा चाहिये वह नहीं मिल पाता है। यदि किसान सिंचित गेहूँ की फसल को उन्नत कृषि तकनीकी अपनाकर लगाये तो उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। साथ ही कृषकों को शुद्ध मुनाफा भी मिलेगा। गेहूँ की बोनी के तुरंत बाद सिंचाई की क्यारियां बना लेनी चाहिये। क्यारियों की लंबाई विभिन्न प्रकार की मिट्टी के लिये इस प्रकार रखें। मटसी भूमि-20-80 मीटर, डोरसा भूमि-30-100 मीटर, कन्हार भूमि-40-120 मीटर।

क्यारियों की चौड़ाई साधारणतया: 3 से 15 मीटर के बीच रखें। क्यारियों में पानी के बहाव के लिये ढाल भी आवश्यक है। विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में इस प्रकार ढाल दें। मटसी भूमि-0.25 से 0.60 प्रतिशत, डोरसा भूमि-0.20 से 0.40, कन्हार भूमि-0.05 से 0.20 प्रतिशत।

भारी एवं ऊंची-नीची यानि असमतल भूमि में सिंचाई बौछार (रिप्रिकलर) द्वारा करना चाहिये। सिंचाई का अधिक से अधिक प्रयोग गेहूँ उत्पादन के लिये हो सके। इसके लिये कृषकों को सिंचाई की नालियों को साफ सुथरी रखनी चाहिये एवं कहीं से पानी रिसाव न हो। इससे जल उपयोग क्षमता बढ़ जाती है। गेहूँ के खेत में सिंचाई करते समय खेत में पानी नहीं भरना चाहिये अन्यथा गेहूँ की फसल को नुकसान हो जायेगा। यदि किसी कारण से अधिक पानी भर जाव तो तुरंत उचित जल निकासी की व्यवस्था करें।

जल प्रबंध सिंचाई - गेहूँ की मुख्य छः क्रांतिक अवस्थाएं होती हैं, यदि इन अवस्थाओं में गेहूँ के खेत में नमी की कमी हो जाती है तो उपज में विपरीत प्रभाव पड़ता है। अतः किसान भाइयों सिंचाई इन्हीं क्रांतिक अवस्थाओं में करनी चाहिये। मध्यम भूमि में अर्थात् जिस भूमि की जल-धारण क्षमता मध्यम है उसमें पर्याप्त सिंचाई निम्नलिखित क्रम से करें -

1. पहली सिंचाई किराट जड़ बनने के समय, बुवाई के 21-24 दिन के बीच। 2. दूसरी सिंचाई कल्ले निकलने के बाद जो बुवाई के 40 दिन में आती है। 3. तीसरी सिंचाई गभोट अवस्था में जो लगभग 75-80 दिनों के बाद आती है। 4. चौथी सिंचाई फूल की अवस्था में करनी चाहिए जो लगभग 60 दिनों बाद आती है। 5. छठवीं एवं अंतिम सिंचाई दानों में गाढापन आने पर जो लगभग 105-110 दिनों में आती है।

सीमित मात्रा में पानी उपलब्ध होने पर जल प्रबंध - 1. एक सिंचाई उपलब्ध होने पर किराट जड़ बनने से लेकर पूर्ण रूप से कल्ले निकलने के बीच कभी भी। 2. दो सिंचाई के लिये पानी की उपलब्धता पर पहली सिंचाई किराट जड़ बनने पर तथा दूसरी सिंचाई गभोट अवस्था में करें। 3. तीन सिंचाई के लिये पहली किराट जड़, दूसरी गभोट अवस्था में तथा तीसरी दानों में दूध भरने के समय करें। क्षेत्र में सीमित साधन उपलब्ध होने के कारण सिंचाई एवं जल प्रबंध का बहुत ही महत्व है।

डॉ. डी.के. शर्मा, डॉ. आर.एन. शर्मा, श्रीमती शिल्पा कौशिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर

केन्द्र में पदस्थ वैज्ञानिक/वि.वि. से तकनीकी सलाह हेतु संपर्क करें-

डॉ. रामनिवास शर्मा - किसानों के अनुभव, नई तकनीकी एवं सफलता की कहानी हेतु

डॉ. दिनेश कुमार शर्मा - प्रचार प्रसार

डॉ. श्रीमती किरण गुप्ता - गृह विज्ञान

श्रीमती निवेदिता पाठक - गृह विज्ञान

इजी. उमेश कुमार ध्रुव - उन्नत कृषि यंत्र

कार्यालय

07752-255024

07752-255024

07752-255024

07752-255024

07752-255024

मोबाईल

9424152366

9425544181

7587179665

9229590288

9752153388

ग्रीष्म कालीन मक्का एक लाभकारी फसल का विकल्प

मक्का एक प्रमुख खाद्यान्न फसल है, साथ ही साथ इसकी उपयोगिता हरे चारे के रूप में की जाती है। मक्का के दाने का उपयोग पशुओं एवं मुर्गीयों के दाने के रूप में किया जाता है। मक्का से औद्योगिक महत्व की अनेक वस्तुएं जैसे- स्टार्च, ग्लूकोज, एल्कोहल, साबुन, कागज, रंग कृत्रिम रबड़ आदि पदार्थ तैयार किये जाते हैं। कम अवधि की होने के कारण यह फसल चक्र में आसानी से ली जा सकती है। प्रतिकूल तापक्रम में जहां धान व गेहूँ की फसल नहीं ली जा सकती है वहीं मक्का की खेती वर्ष भर की जा सकती है।

क्र	किस्म	उन्नत जातियां	बुवाई की विधि एवं अंतराल	बीज की मात्रा (कि./हे.)	बीजोपचार (ग्रा./कि.)	बोनी का समय	उर्वरक की मात्रा (कि./हे.)
1.	मक्का	संकर मक्का, गंगा 11, गंगा 3, डक्कन 109, प्रो.311 (4240) संकुल मक्का-विजय कंचन,श्वेता नवीन	कतार विधि छिड़काव 50X20 से.मी.	कम्पोजिट 15-20 संकर 10-12	विटैवैक्स पावर 3ग्राम/किलो बीज	खरीफ- जून के अंतिम सप्ताह रबी- मध्य नव. से दिसं. ग्रीष्म- 05-15 अप्रैल तक	कम्पोजिट 60:40:30 एन.पी.के. संकर 80:50:40 एन. पी.के.
		खरपतवार नियंत्रण	सिंचाई	उपज (क्वि/हे.)	आर्थिक विवेक्षण / हेक्टेयर (रूपये)		
		एट्राजीन @ 1 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व/हे. बुवाई के बाद परंतु अंकुरण से पूर्व	खरीफ वर्षा की अनियमितता में आवश्यकता पड़ने पर रबी में 4-6 ग्रीष्म में 5-6	35-40 क्वि./हे.	भूमि की तैयारी बुवाई बीज उर्वरक निंदाई मिट्टी चढ़ाना सिंचाई कटाई	1200रु. 500रु. 2000रु. 4000रु. 1000रु. 4000रु. 3000रु. 2000रु.	उपज 150 क्वि./हे. (हरा भुट्टा) विक्रय दर 500रु./क्वि. = 75000रु. -18000रु. = 57000 रु. शुद्ध आय उपज 60 क्वि./हे. (दाना) विक्रय दर 1000रु./क्वि. = 60000रु. -18000रु. = 42000 रु. शुद्ध आय
अनुमानित लागत 18000रु./हे.							

श्रीमती शिल्पा कौशिक, श्री विनोद निर्मलकर, डॉ.डी.के. शर्मा, डॉ. किरण गुप्ता, कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर

कृषक व कृषक महिलाओं के लिये प्रशिक्षण

प्रक्षेत्र अनुसंधान परीक्षण

	विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
फसल उत्पादन	04	04	72	03	03	65
कृषि विस्तार	07	07	168	03	03	100
गृह विज्ञान	02	02	42	02	02	40
कृषि अभियांत्रिकी	01	01	11	03	03	60
उद्यानिकी	02	02	46	03	03	70
पौध रोग	05	05	95	03	03	90
कृषक दिवस/मेला	03	05	724	04	04	-

फसल	विगत तीन माह की गतिविधियां	
	परीक्षण	लाभान्वित
1. तिवड़ा की उन्नत प्रजाति का परीक्षण	05	05
2. कुपोषण से बचाव (3-5 वर्ष के बच्चे)	06	06
3. गेहूँ बोने के उपरांत खरपतवारनाशी का प्रभाव	05	05
4. चना फसल में उकठा रोग प्रबंधन	04	04
5. सरसों में माह कीट प्रबंधन	04	04
6. टमाटर में लीफ ब्लाइट प्रबंधन	04	04
7. गेहूँ की CG-1006 जाति का प्रभाव	01	01
8. ट्रेक्टर द्वारा कतार बोवाई परीक्षण	04	04
9. बैल चलित कतार यंत्र परीक्षण	04	04
10. आलू उत्पादन में जिप्सम का प्रभाव	04	04

सेवारत कर्मचारियों के लिये प्रशिक्षण

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

	विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
कृषि अधिकारी	-	-	-	04	08	80
आंगन बाड़ी कार्यकर्ता	-	-	-	02	04	40
आंगन बाड़ी सहायिका	-	-	-	02	04	40
कृषक संगवारी	-	-	-	15	15	780
आत्मा (कृषक)	03	08	58	-	-	-

फसल	विगत तीन माह की गतिविधियां	
	लाभान्वित	क्षेत्र/हे.
1. अरहर- राजीव लोचन ICAR	20	5.0
2. अरहर- राजीव लोचन AICRP	10	2.0
3. चना - Jaki-9218	25	5.0
4. सरसों -छत्तीसगढ़ सरसों	13	5.2
5. गेहूँ बीज उत्पादन RKVY	20	20.0
6. चना के उकठा रोग प्रबंधन हेतु ट्राइकोडरमा एवं राइजोबियम प्रयोग	14	21.50

सुरक्षित अनाज भंडारण के लिये आवश्यक सुझाव

1. अनाज को भंडारण से पहले अच्छी तरह सुखा लें । जिससे अनाज के अंदर की नमी 08-10 प्रतिशत तक हो जायें ।
2. भंडारण से पूर्व सफाई कर लें, दीवारों व फर्श की दरारों व गड्ढों को बंद कर दें । दीवारों पर 120-150 से.मी. उंचाई तक तारकोल पोत देना चाहिये ।
3. भंडारण से पूर्व भंडारणगृह को 10-12 कि.ग्रा. प्रति 1000 घनफुट के हिसाब से इ.सी.डी.टी. मिश्रण से प्रधूमन करें । जिससे छिपे हुये अंडे व कीट नष्ट हो जायें ।
4. अनाज को भंडारण के तुरंत बाद ही (ई.डी.बी. एम्प्यूल) प्रधूमित कर दें । भंडार कक्षों में रखें अनाज का ही प्रधूमन करना चाहिये । एक एम्प्यूल (3 मि.ली.) प्रति क्विंटल बीज के लिये पर्याप्त है ।

इंजी. उमेश कुमार ध्रुव, डॉ. किरण गुप्ता, डॉ. डी.के. शर्मा, डॉ.पी.सी. चौरसिया

रबी फसलों के प्रमुख रोग, लक्षण एवं प्रबंधन

रोग	लक्षण	प्रबंधन के उपाय
गेहूँ का अनावृत्त कंड अथवा छिदरा कंडवा रोग	इस रोग के लक्षण पौधे से बालियां बाहर निकलने पर ही दिखाई देते हैं । रोगग्रसित पौधों की समस्त बालियां सीकुर को छोड़कर एक काले चूर्णिल समूह में बदल जाता है । आरम्भ में यह काला चूर्ण समूह एक नाजुक धूसर झिल्ली द्वारा ढंका रहता है, जो शीघ्र ही फट जाती है	सर्वांगी कवकनाशी जैसे प्लान्टवैक्स या विटैवैक्स से 2.5 ग्राम/किलो बीज के हिसाब से शुष्क बीज उपचार करना चाहिए । बीज को 4 घण्टे तक जल में भिगोने के पश्चात् 4 घण्टे तक धूप में सुखा लिया जाता है । इस प्रकार बीजों को उपचारित करने से बीज के भीतर छुपा प्रसुप्त कवकजाल मर जाता है ।
गेहूँ का आल्टनेरिया पर्ण अंगमारी अथवा पत्ती अंगमारी अथवा पत्ती झुलसन	पौधे की निचली पत्तियों पर अनियमित रूप से बिखरे हुये छोटे अण्डाकार भूरे रंग के धब्बे बनते हैं जो बाद में टेढ़े-मेढ़े आकार के हो जाते हैं । कभी-कभी इन धब्बों को चारों ओर से एक चमकीला पीला परिवेश घेरे रहता है । बाद में यह धब्बे आपस में मिलकर पत्ती का अधिकांश भाग ढंक लेते हैं ।	फसल में उर्वरकों की निर्धारित मात्रा का ही प्रयोग करें । 2.5 ग्राम बीटावेक्स दवा से प्रति किलो बीज के हिसाब से शुष्क बीज उपचार करें । कुछ कवकनाशी जैसे टिल्ट या कन्टाफ की 1 मि .ली. प्रति लीटर जल में घोलकर प्रति हैक्टेयर के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए ।
उकठा ल्ट रोग	ग्रसित पौधे की नीचे की पत्तियाँ पीलापन लिये हुये होती हैं लेकिन अधिकांश पत्तियों का रंग हल्का हरा होता है, जो धीरे-धीरे पीला होता जाता है तथा अन्त में हल्का भूरा या भूसे के रंग का हो जाता है रोग ग्रसित पौधे की सूखी पत्तियाँ भूमि पर नहीं गिरती तने को नीचे जड़ की ओर मध्य से चीरने पर मध्य भाग पर गहरे भूरे या काले रंग की धारी दिखाई देती है ।	उकठा ग्रसित खेतों में फसल चक्र अपनानें तथा प्रतिवर्ष चना न लगाये । खेत में मूंगफली, तिल या सरसों की खली खाद के रूप में डाली जाय तो रोग के प्रकोप की संभावना कम रहती है । ग्रीष्म ऋतु में मिट्टी पलटने वाले हल से खेत की गहरी जुताई करें । बुवाई से पहले बीज को थायरम या केप्टान 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज तथा ट्राइकोर्डमा, राइजोबियम से इसी कम से 10 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए । रोग अवरोधी किस्में जैसे : जे.जी. 74, जे.जी. 11 जाकी विजय, वैभव, आदि को लगायें ।
सरसों की सफेद गेरुआ (फफोला) रोग	पत्तियों की निचली सतह पर सफेद या मलाई के समान उभरे हुये फुन्सियों के रूप में परिलक्षित होते हैं । जिनका आकार 1 से 2 मि .मी. होता है । इसके पश्चात् ये फुन्सियाँ आपस में मिलकर एक बड़े चकत्ते का रूप ले लेती है । फुन्सियाँ पत्तियों की निचली सतह पर बिखरी हुई होती है । ऊपरी सतह पर फुन्सियों के ठीक विपरीत आकार के पीले धब्बे बनते । जिसके कारण रोग को आसानी से पहचाना जा सकता है ।	3 ग्राम थीरम या मेटा लेक्जिल 6 ग्राम प्रति किलो बीज दर से बीजोपचार कर बुवाई करें । फसल की बुवाई अक्टूबर के द्वितीय सप्ताह तक अवश्य कर दें, यदि इस फसल पर रोग आता हो तो 2-3 छिड़काव डायथेन एम 45 या तांबा युक्त दवा फाइटोलान 3 ग्राम प्रति लीटर की दर से 8-10 दिन के अंतर पर करें । रोग की अवस्था से पहला छिड़काव रिडोमिल एम जेड 72 डब्लू.पी. के 2 ग्राम दवा प्रति लीटर घोल का छिड़काव करें । फसल अवशेष कटाई के बाद अवश्य नष्ट करें ।

श्री विनोद कुमार निर्मलकर, डॉ. डी.के. शर्मा एवं श्रीमती शिल्पा कौशिक



ग्राम नवगंगा (बिल्हा)में ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षण



ग्राम खरगहना में इंदिरा सीड कम फर्टिलाइजर यंत्र द्वारा गेहूँ की बुआई



मा. कुलपति डॉ. एस.के. पाटिल द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन

सामयिक सलाह – 2013

जनवरी

- ★ शीतकालीन गन्ने में नत्रजन युक्त (यूरिया) का एक चौथाई भाग दें। पकी हुई फसल की कटाई कर कारखाना अथवा बाजार भिजवाने की व्यवस्था करें। गुड़ बनाने का कार्य करें।
- ★ प्याज की फसल में नत्रजन की शेष आधी मात्रा देकर सिंचाई करें।
- ★ आम, अमरुद, कटहल, आवला, चीकू आदि के वृक्षों में तनाछेदक कीट को नष्ट करने के लिये मिट्टी का तेल डाले या रूई के फाहे में रोगर या मोनेक्रोटोफास को लगाकर छेद में डालें व छेद को मिट्टी से बंद कर दें।
- ★ प्रथम सप्ताह तक शीघ्र पकने वाला गेहूँ बोया जा सकता है।
- ★ समय से बोये गये गेहूँ में 20-25 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें। फिरीट जड़ अवस्था में नत्रजन डालें, एक माह बाद नींदा नियंत्रण करें।
- ★ चना, मटर, मसूर, सरसो, अलसी में फूल आने के पूर्व सिंचाई करें, कटुआ इल्ली के प्रकोप से रक्षा करें एवं असिंचित अवस्था में 2 प्रतिशत यूरिया घोल कीटनाशक के साथ ही छिड़काव करें।
- ★ गन्ने की शीतकालीन फसल बढवार पर होती है अतः सिंचाई करना आवश्यक है।

फरवरी

- ★ जनवरी में बोई गई फसलों में सिंचाई व गुड़ाई करते रहें।
- ★ बसंत कालीन गन्ने की उन्नत किस्म का चुनाव कर बीजोपचार कर लें, खेतों में नाली बनाकर खाद एवं उर्वरक डालें, गन्ने के दो से तीन आँखों वाले टुकड़े लगायें।
- ★ आम में गुच्छा रोग से ग्रस्त पुष्प गुच्छों को नष्ट कर दें एवं पोटेथियम मेटाबाई सल्फेट का 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- ★ आलू की फसल खुदाई के पहले सिंचाई बंद कर दें और जमीन से ऊपर पोधे की कटाई कर दें। इससे आलू के कंद पुष्ट होंगे।
- ★ आम का फुदका कीट एवं चूर्णी फफूंदी से बचाव के लिये कार्बोरिल डस्ट 2 ग्राम और सल्फेक्स 3 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ★ कस्तूरी भिण्डी व चंद्रसूर की कटाई करें, लेमन घास की बुवाई करें।
- ★ अदरक, हल्दी एवं कंद वर्गीय फसलों की खुदाई करें।
- ★ ग्रीष्मकाल के प्रारंभ में फूल प्राप्त करने के लिये गेंदे की बुवाई करें, रजनीगंधा में खाद व उर्वरक दें। धीक्चोर (एलोवेरा) के पोधे निकालकर बेचें। मेन्था के सकर्स नर्सरी में लगायें। सफेद मूसली के कंद की खुदाई कर धोये तथा छीलकर सुखायें।
- ★ फरवरी माह में केला व पपीता लगाने की तैयारी करें। गोभी वर्गीय फसल में 750 मिली. मिथाइल डेमेटान 25 ई.सी. दवा छिड़के।
- ★ गेहूँ एवं अन्य रबी फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। असिंचित अवस्था में 2-3 प्रतिशत यूरिया घोल का छिड़काव करें।

प्रस्तुत लेखों पर संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। ये लेखकों के स्वयं के विचार हैं— संपादक

मार्च

- ★ गन्ने की शरदकालीन फसल में हल्की मिट्टी चढ़ाये तथा सिंचाई करते रहें अग्र तना छेदक कीट प्रकोप से फसल बचाने हेतु फोरेट 10 जी. या कार्बोफ्यूरा 3 जी. दानेदार दवा का प्रयोग करें।
- ★ नर्सरी में तैयार पोधे की रोपाई करें बच के कंदों की खुदाई करें तथा धूप में सुखायें।
- ★ लेमन घास की फसल में गोबर घोल का छिड़काव करें।
- ★ चना, अलसी, तिवड़ा, मटर, राजमा, मसूर एवं सरसो इत्यादि फसलों की कटाई कर ग्रीष्मकालीन फसलों हेतु खेत की तैयारी करें।
- ★ गन्ने की बोआई मासांत तक कर लें, बोने के 7-10 दिन बाद बैल चालित हो द्वारा अंधी गुड़ाई करने से अंकुरण अच्छा होता है। कटहल में फल गलन से बचाव हेतु डायथेन एम-45 या जिंक कार्बोनेट 0.025 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- ★ पत्तियों पीली पड़ने पर कंदों की खुदाई करें तथा धूप में सुखायें।
- ★ प्याज की तैयार फसल की खुदाई से 10-15 दिन पहले पानी देना बंद कर दें एवं पत्तियों को जमीन की सतह से झुका दें।
- ★ आम, आवला, चीकू में फल विकसित होने का समय है अतः इन वृक्षों में 8-10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

डॉ. दिनेश कुमार शर्मा

प्रमुख वैज्ञानिक
कृषि प्रसार शिक्षा, कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर

केन्द्र में पदस्थ वैज्ञानिक/वि.व.वि. से तकनीकी सलाह हेतु संपर्क करें—

श्रीमती शिल्पा कौशिक – फसल उत्पादन
श्री देवेन्द्र उपाध्याय – उद्यानिकी
श्री विनोद कुमार निर्मलकर – पौध रोग
डॉ. फूलचंद चौरसिया – उद्यानिकी
कृ. समर्थ बेदी – पादप प्रजनन
श्रीमती सुशीला ओहदार – कम्प्युटर

कार्यालय

07752.-255024
07752.-255024
07752.-255024
07752.-255024
07752.-255024
07752.-255024

मोबाईल

9424152366
9893304639
9827481051
9752679118
9685212650
8103938739



भारत शासन सेवार्थ

बुक-पोस्ट

सेवा में,
श्रीमान/डॉ. _____

प्रेषक –
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, सरकण्डा,
बिलासपुर (छ.ग.)
फोन: (07752) 255024



किसानों का मितान – कृषि विज्ञान केन्द्र

सदस्यता शुल्क 25 रु. वार्षिक